सावन में क्यों पहननी चाहिए हरी चूड़ियां, क्या है इस रंग को उपयोग करने के लाभ

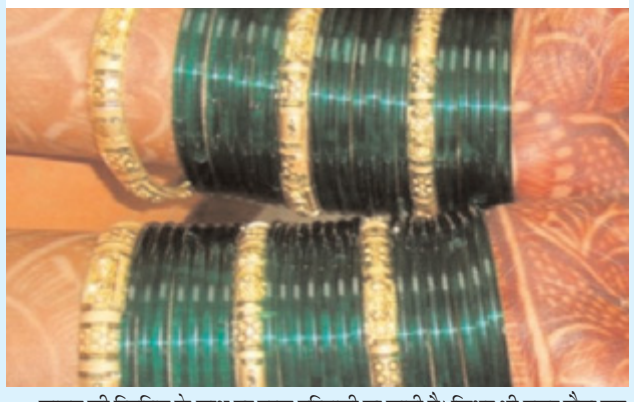

सावन की रिमझिम के साथ हर तरफ हरियाली छा जाती है। जिधर भी नजर दौड़ा कर देखा जाए प्रकृति के सौन्दर्य का दर्शन होता है। कुदरत के बदले स्वरूप के साथ महिलाओं के श्रृंगार में भी परिवर्तन आ जाता है। प्रकृति से एकाकार होने के लिए वह हाथों में हरी मेंहदी रचाती हैं, हरे वस्त्र और हरी चूड़ियां धारण करती हैं। धार्मिक महत्व की दृष्टि से देखा जाए तो सावन के महीने में हरे रंग का अधिक से अधिक उपयोग करने से सोया भाग्य जागृत होता है। हिंदू शास्त्रों में प्रकृति को परमात्मा का दर्जा दिया गया है इसलिए उसका पूजन करने का विधान है। ज्योतिषी विद्वान मानते हैं कि हरा रंग सौभाग्य का प्रतीक है।

सावन माह में सुहागिनों के बहुत सारे पर्व आते हैं, जिनमें कज्जली तीज और हरियाली तीज मुय हैं। इन पर्वों पर हरे वस्त्र, हरी चूड़ियां और मेंहदी लगाने का नियम प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। इससे श्री और सौभाग्य में वृद्धि होती है, पति-पत्नी के संबंध प्रगाढ़ बनते हैं।

हरे रंग का संबंध बुद्ध ग्रह से है। उनके शुभ प्रभाव से व्यक्ति की जीविका में उतार-चढ़ाव आते हैं। करियर और व्यापार में शुभता के लिए इस महीने में अधिक से अधिक हरे रंग का प्रयोग करके बुद्ध देव को प्रसन्न करें। जो सुहागन महिलाएं ऐसा करती हैं उनके घर में सेपन्नता और धन-धान्य बढ़ता है।

जो लोग सावन में हरा रंग धारण करते हैं, भगवान शिव उन पर विशेष अनुकंपा बरसाते हैं। सावन में प्राकृतिक सामग्री से शिव पूजन किया जाता है, जिससे भोले बाबा खुश होते हैं। जो लोग स्वयं को प्रकृति के अनुरूप ढाल लेते हैं, वह शिव जी के प्रिय बन जाते हैं। जो महिलाएं सावन माह में हरे रंग की चूड़िया पहनती हैं, श्री हरि विष्णु उन पर प्रसन्न होते हैं।

सकारात्मक ऊर्जा में बढ़ौतरी के लिए हरा रंग खास भूमिका निभाता है। पति-पत्नी के रिश्ते में मिठास भरने के लिए बेडरुम के दक्षिण पूर्व हिस्से को हरे रंग से पुतवाएं।

आपके घर का दर्पण बदल सकता है आपकी किस्मत

अगर आप वास्तु शास्त्र की बात करें तो इसमें सबसे शक्तिशाली चीजें में एक दर्पण को माना गया है। इस बात का अंदाजा आप इसी से लगाया जा सकता है कि दर्पण वास्तु शास्त्र में किसी भी प्रकार के वास्तु-दोष निवारण के लिए काफी उपयोगी माना गया है। दर्पण में अप्रत्याशित सौभाग्य, धन-संपत्ति, और घर में हर्षोल्लास लाने की क्षमता होती है। लेकिन यह भी माना जाता है कि अगर इसका प्रयोग घर के सही स्थान पर नहीं किया गया है तो यह नकारात्मकता को भी उतनी ही शक्ति से बढ़ाता है। दर्पण जितना भाग्य को आकर्षित करता है उतना ही दुर्भाग्य को भी। आइए आपको बतातें है इसकी सावधानियों के बारे में-

» तिजोरी के सेमुख रखा दर्पण धन में दिन दुगुनी, रात चौगुनी वृद्धि करता है।

» - घर में खाने की डाइनिंग टेबल के सेमुख रखा दर्पण घर में अखंड धन-धान्य का कारक होता है।

» प्रयास करें कि दर्पण जिस भी दीवार पर लगायें, फर्श से उसकी ऊंचाई 4 से 5 फीट हो।

» घर में यथासंभव चौकोर या आयताकार शीशा ही लगायें।

» दर्पण को घर की उेर और पूर्व दिशा की दीवार पे लगाना सबसे उेम रहता है।

» अपने ड्रेसिंग टेबल में एक बड़ा शीशा लगाये और इसे अपने बिस्तर के साइड में लगाये ताकि सोते समय आप शीशे में ना दिखें। ऐसा करना शुभ माना जाता है।

» - यदि आपके घर का कोई कोना कटा हुआ है तो उस दिशा में शीशा लगा दें, इससे उस कोने का वास्तु दोष समाप्त हो जायेगा।

» घर के खिड़की और दरवाजों के शीशे कभी भी पारदर्शक नहीं होने चाहियें।

» - कदापि भी दो दर्पण एक दुसरे के सेमुख नहीं लगाने चाहियें, इससे उर्जा अनियंत्रित होती है।

कुछ इस तरह थी भगवान राम और हनुमान जी की पहली मुलाकात

भगवान हनुमान को पूरे संसार में 'रामभक्त हनुमान' के नाम से जाना जाता है और उनकी भक्ति और मिलन की कहानियों को हर कोई पढ़ना चाहता है। आज हम आपको प्रभु राम और भगवान हनुमान की पहली मुलाकात के बारे में जानकारी देने वाले हैं। पहली बार भगवान हनुमान अपने प्रभु राम से कब मिले, कैसे मिले और कहां मिले? इस संबंध में कई सारी पौराणिक कहानियां प्रचलित हैं, लेकिन हम आपको बता दें महर्षि वाल्मीकि द्वारा 'रामायण' ग्रंथ में दिया गया श्रीराम-हनुमान मिलन का प्रसंग ही सही माना जाता है। अन्य संस्करणों एवं क्षेत्रीय कहानियों को आधार पर कई कहानियां हैं, जो पूर्ण रूप से सत्य से मेल नहीं खातीं। महर्षि वाल्मीकि जी के अनुसार हनुमान जी की पहली मुलाकात अपने आराध्य श्रीराम से किष्किंधा के वन में हुई थी। यह प्रसंग तुलसीदास जी द्वारा भी रामचरित मानस में जोड़ा गया है, इस महान ग्रंथ को 'किष्किंधाकाण्ड' के नाम से जाना जाता है। यह तब की बात है जब वानर सुग्रीव अपने बड़े भाई बालि के प्रकोप से डरकर अपने मित्र हनुमान की शरण में आते हैं और उनसे छिपने के लिए सहायता मांगते हैं। इसी दौरान सुग्रीव को वन की ओर से दो पुरुषों को आते हुए देखते हैं, उन्होंने सादे वस्त्र पहने थे किंतु शस्त्र धारण किए हुए थे। सुग्रीव के मन में भय प्रकट हुआ। उन्हें लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि ये भाई बालि के भेजे हुए गुप्त सैनिक हो सकते हैं जो उनकी हत्या के लिए भेजे गए हैं।

सुग्रीव ने इस बात की जानकारी हनुमान जी को दी और कहा कि मित्र, आप स्वयं वन में जाकर पूछताछ करें कि ये दोनों पुरुष कौन हैं, कहां से आए हैं और इनका वन में आने का उद्देश्य क्या है। मित्र की परेशानी को समझते हुए हनुमान ब्राह्मण का रूप धारण कर श्रीराम और लक्ष्मण के सामने पहुंच गए और उनसे पूछताछ करने लगे। हनुमान जी ने पूछा कि आप दोनों कौन हैं, कहां से आए हैं और आपको क्या चाहिए? पूछने पर श्रीराम बोले ने उ?हें आने और सीता माता के अपहरण की पूरी घटना बताई। जैसे ही हनुमान जी को अहसास हुआ कि ये तो प्रभु राम हैं, वह फूले नहीं समाते है और इस बात की खुशी उनके चेहरे पर साफ झलक उठती है। सच्चाई जानने की देर ही थी कि हनुमान जी अपने असली रूप में वापस लौट आए और श्रीराम के चरण पक?कर धरती पर गिर पड़े।

यह पल ऐसा था मानो हनुमान जी को पूर्ण संसार मिल गया हो। उनके मुख से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था, बस अपने प्रभु को पा लेने की जो खुशी उनके मुख पर दिखाई दे रही थी, उसका कोई मोल नहीं था। हनुमान ने श्रीराम से क्षमा मांगी, कहा 'यह मेरी भूल है जो मैं आपको पहचान ना सका। ना जाने यह कैसे हो गया कि मेरे प्रभु मेरे समक्ष ख? थे और मैं ज्ञात ही ना कर सका'।

तब श्रीराम ने हनुमान को अपने चरणों से उठाया, गले से लगाया और कहा, 'हनुमान तुम दुखी ना हो, शायद तुम्हें यह आशा ही नहीं थी कि मैं तुम्हे यहां वन में इस वेष में मिलूंगा। तुम दिल छोटा मत करो'।

सप्तम भाव में ऐसे ग्रह हों तो प्रेम में मिलता है बार-बार धोखा

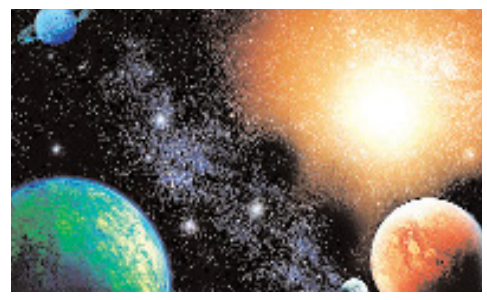

आज हम सप्तम भाव से रिलेटेड कुछ खास बातों पर वार्ता करेंगे। आपने देखा होगा । कि अक्सर व्यक्ति के जीवन में कई प्रेम प्रसंग की घटनाएं होती हैं वहीं कुछ ऐसे भी इंसान होते हैं, जिनके जीवन में विपरीत लिंगी प्रेम का अभाव होता है। कुछ लोग एक शादी को तरसते हैं, वहीं कुछ तलाक पर तलाक दिए जाते हैं। इसके साथ ही इस भाव से मनुष्य की यौन इच्छाओं का भी सटीक विश्लेषण किया जा सकता है।

लाइफ में प्रणय और विवाह के मामलों में विचित्र अनुभवों से साक्षात्कार होना कोई बड़ी बात नहीं किंतु ये जरूर हैरान करने वाली बात है। कि इनका संबंध कुण्डली के सप्तम भाव से होता है। हालांकि सप्तम भाव केवल प्रेम और विवाह को ही रिप्रजेंट नहीं करता है। बल्कि ये मारक भाव भी है। किंतु इसके लिए ग्रहों की विशिष्ट स्थितियां होती हैं। यानि हर अवस्था में ये भाव मारक सिद्ध हो ऐसा कदापि आवश्यक नहीं।

किंतु प्रेम और विवाह के सभी पहलुओं का कुण्डली के इस स्थान से पता लगाया जा सकता है। एक जीवित व्यक्ति की कुण्डली से इसका अध्ययन करते हैं जिससे बात ज्यादा साफ-साफ समझ में आएगी ।

तुला लग्न से संबंधित इस व्यक्ति के लग्न चक्र में राहु व मंगल सप्तम स्थान में विराजित हैं, शनि तीसरी पूर्ण दृष्टि से तथा केतु सातवीं पूर्ण दृष्टि से सप्तम भाव को देख रहा है।

इस व्यक्ति के जीवन में जब-जब राहु की दशा-अंतरदशा-प्रत्यंतर दशा चली तब-तब नए-नए प्रेम संबंधों का प्रणयन हुआ। किंतु ये संबंध कभी भी सुखद नहीं रहे वरन् उसे हमेशा धोखे और छद्मजाल का शिकार बनना पड़ा।

ऐसा क्यों हुआ इसका कारण साफ है। उल्लेखित व्यक्ति की कुण्डली में सप्तम स्थान राहु, केतु, शनि व मंगल से पीड़ित हुआ। एक भी शुभ ग्रह का उसे सपोर्ट नहीं मिला जिससे सप्तम भाव वाली घटनाएं अपने विकृत रूप में घटित हुईं और बार-बार हुईं। राहु की इस स्थान में मौजूदगी उसे स्वच्छंद यौन संबंधों की ओर प्रेरित करती रही किंतु विश्वसनीय संबंधों का सर्वथा अभाव बना रहा।

शनि, केतु व मंगल तथा राहु विच्छेदक ग्रह हैं। इनकी किसी स्थान पर मौजूदगी या दृष्टि उस व्यक्ति को उस भाव संबंधी बातों से पृथक करती है। इसके अलावा राहु और केतु की तामसी प्रवृत्तियां इस व्यक्ति को भी तामसिक बनाती हैं तथा जो भी प्रेम या विवाह संबंध बने, उससे रिलेटेड व्यक्ति भी तामसिक रहे। भोग ऐसे इंसान के जीवन में टूट कर आता है किंतु वह उस भोग से संतुष्ट होने की बजाय समस्याओं में घिरता चला जाता है।

इसके साथ ही राहु की घटना को आकस्मिक रूप से घटित कराने की क्षमता भी ऐसे व्यक्ति के जीवन में प्रॉब्लम्स की अधिकता लेकर आती है। कब कौन सा संबंध खतरनाक सिद्ध होगा (प्रेम व विवाह संबंधी) इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। ज्यादातर मामलों में ऐसे लोगों का वैवाहिक जीवन कष्टप्रद होता है।

क्या आपका जन्म भी राक्षस गण में हुआ

नक्षत्र ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म के समय मौजूद नक्षत्र के आधार पर व्यक्ति का गण निर्धारित होता है।

देव गण: जो मनुष्य देव गण से संबंध रखता है वह दानी, बुद्धिमान, कम खाने वाला और कोमल हृदय का होता है। ऐसे व्यक्ति के विचार बहुत उत्तम होते हैं, वह अपने से पहले दूसरों का हित सोचता है।

ज्योतिष शास्त्र: ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत प्रत्येक मनुष्य को तीन श्रेणियों में बांटा गया है। जो उनके गण के आधार पर निर्धारित हैं। ये तीन श्रेणियां हैं देव गण, मनुष्य गण और राक्षस गण। गण के आधार पर मनुष्य का स्वभाव और उसका चरित्र भी बताया गया है।

मनुष्य गण: वहीं जिन लोगों का संबंध मनुष्य गण से होता है। वह धनवान होने के साथ ही धनुविद्या के अच्छे जानकार होते हैं। उनके नेत्र बड़े-बड़े होते हैं। साथ ही वह समाज में काफी सम्मान पाते हैं । और लोग उसकी बात को ऊपर रखकर चलते हैं।

राक्षण गण: लेकिन जब बात आती है राक्षण गण की तो बहुत से लोग इसका नाम सुनकर ही डर जाते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि आप में से बहुत से लोग जब अपनी कुंडली चेक करवाएंगे तो आपका गण भी राक्षस ही आएगा। भयभीत होने की जरूरत नहीं है।

खूबियां: क्योंकि यह भी अन्य दोनों गणों की तरह एक गण ही है, लोग इसे गलत अर्थों में लेकर भ्रांतियां गढ़ने लगते हैं। जोकि कदापि सही नहीं है। हां इसकी खूबियां थोड़ी अलग और विशिष्ट हैं।

भिन्न-भिन्न तरह की शक्तियां: हमारे आसपास भिन्न-भिन्न तरह की शक्तियां मौजूद होती हैं, उनमें से कुछ नकारात्मक होती हैं तो कुछ सकारात्मक। ज्योतिष विद्या के अनुसार जिन लोगों का संबंध राक्षस गण से होता है। वह अपने आसपास मौजूद नकारात्मक शक्तियों को पहचान लेते हैं। उन्हें बुरी शक्तियों का आभास अपेक्षाकृत जल्दी हो जाता है।

छठी इन्द्री: राक्षस गण के जातकों की छठी इन्द्री यानि कि सिक्स सेंस ज्यादा बेहतर तरीके से कार्य करता है और वो इतनी क्षमता भी रखते हैं । कि जब उनके सामने हालात नकारात्मक होते हैं तो वे भयभीत होने की बजाय उन हालातों का सामना करते हैं।

मजबूत इच्छाशक्ति

राक्षस गण के जातक साहसी और मजबूत इच्छाशक्ति वाले होते हैं, उनके जीने का तरीका स्वच्छंद होता है।

नक्षत्रों की भूमिका: ज्योतिष शास्त्र में जन्म के समय मौजूद नक्षत्रों की भूमिका बहुत बड़ी होती है। आप किस ग्रह के अंतर्गत जन्में हैं, किस राशि के अधीन आते हैं और आपके जन्म का नक्षत्र क्या था, ये बात आपके पूरे जीवन की रूप रेखा खींच देती है।

राक्षण गण: तो चलिए जानते हैं किस नक्षत्र में जन्में लोग राक्षण गण के माने जाते हैं।

नक्षत्र: अश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, मघा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग राक्षण गण के अधीन माने जाते हैं।

राक्षस गण: तो अगर आपको भी लगता है कि आपके भीतर भी राक्षस गण जैसे गुण या विशेषताएं मौजूद हैं तो एक बार किसी अच्छे ज्योतिष से अपनी कुंडली जरूर चेक करवा लें।

श्रद्धा एवं जागरूकता

श्रद्धा और सजगता, दोनों एक दूसरे के विरोधाभासी लगते है। जब तुम पूर्णतः जागरूक होते हो तो अेसर श्रद्धा नहीं रहती और तुम व्याकुल एवं असुरक्षित महसूस करते हो। जब तुम किसी पर पूर्ण विश्वास कर के चलते हो अर्थात श्रद्धा से चलते हो, तब मन पूर्ण रूप से शांत एवं सुरक्षित महसूस करता है और विश्राम में रहता है। तब तुम जागरूक नहीं रहते !

श्रद्धा तीन प्रकार की है

तामसिक श्रद्धा - तामसिक श्रद्धा आलस्य से उत्पन्न होती है। जैसे, जब तुम कोई जिमेदारी नहीं लेना चाहते हो, या आलस्यवश कोई काम नहीं करना चाहते, तब तुम कहते हो कि, 'कोई बात नहीं, भगवान सब ठीक कर देंगे।' राजसिक श्रद्धा - जब तुम इच्छा और तृष्णा के तीव्र वेग के कारण श्रद्धा का सहारा लेते हो, तब इच्छापूर्ति की तीव्रता ही तेहारी श्रद्धा को जीवित रखती है। ये राजसिक श्रद्धा है।

सात्विक श्रद्धा - ऐसा विश्वास, ऐसी श्रद्धा जो निष्कपट हो, भोलापन लिए हो और जो हमारी चेतना की पूर्णता से उत्पन्न हुई हो, वह सात्विक श्रद्धा है।

श्रद्धा के बिना आंतरिक विकास संभव नहीं

श्रद्धा एवं जागरूकता भले ही एक दूसरे के विरोधाभासी लगते हों, परन्तु वे एक दूसरे के पूरक है। श्रद्धा के बिना तेहारा आंतरिक विकास संभव नहीं है। और बिना सजगता के तुम कुछ भी भली-भांति समझ नहीं पाओगे। श्रद्धा तेहे आनंद के मार्ग पर ले जाती है और सजगता तेहें व्याकुल रखती है।

जहां विश्वास नहीं वहां भय

जहां विश्वास (श्रद्धा) नहीं है वहां भय रहता है, और जब जागरूकता कि कमी हो तो न तो तुम कुछ ठीक से समझ पाओगे और न ही उसे ठीक से व्यक्त कर पाओगे। अतः दोनों का मिश्रण अत्यंत आवश्यक है। ज्ञान में स्थित होकर सजग रहने से तनाव विहीनता आती है, श्रद्धा आती है और आनंद आता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है श्रद्धा से उत्पन्न मूर्खता (राजसिक श्रद्धा) के तत्वों अर्थात आलस्य को मिटाना एवं जागरूकता से उत्पन्न भय और व्याकुलता को भी मिटाना। यह एक अनोखा एवं अतुल्य मिश्रण है। अगर तुम्हारे अन्दर श्रद्धा एवं जागरूकता एक साथ दोनों ही हैं । तो तुम सही मायनों में एक ज्ञानी बन जाओगे।

ज्योतिष पर ओशो के विचार

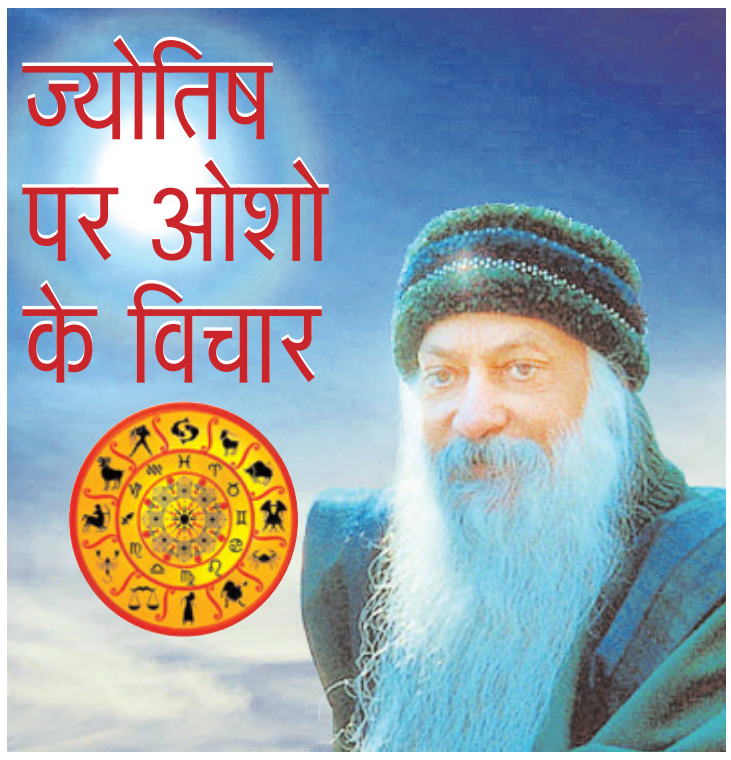

ज्योतिष के नाम पर सौ में से निन्यानबे धोखाधड़ी है। और वह जो सौवां आदमी है, निन्यानबे को छोड़ कर उसे समझना बहुत मुश्किल है।` योंकि वह कभी इतना डागमेटिक नहीं हो सकता कि कह दे कि ऐसा होगा ही।` योंकि वह जानता है कि ज्योतिष बहुत बड़ी घटना है। इतनी बड़ी घटना है कि आदमी बहुत झिझक कर ही वहां पैर रख सकता है। जब मैं ज्योतिष के संबंध में कुछ कह रहा हूं तो मेरा प्रयोजन है कि मैं उस पूरे-पूरे विज्ञान को आपको बहुत तरफ से उसके दर्शन करा दूं उस महल के। मैं इस बात की चर्चा कर रहा हूं कि कुछ आपके जीवन में अनिवार्य है। और वह अनिवार्य आपके जीवन में और जगत के जीवन में संयुक्त और लयबद्ध है, अलग-अलग नहीं है। उसमें पूरा जगत भागीदार है। उसमें आप अकेले नहीं हैं।

ज्योतिष के तीन हिस्से

अस्तित्व में सब क्रिसक्रास प्वाइंट्स हैं, जहां जगत की अनंत शक्तियां आकर एक बिंदु को काटती हैं; वहां व्यक्ति निर्मित हो जाता है, इंडिविजुअल बन जाता है। तो वह जो सारभूत ज्योतिष है उसका अर्थ केवल इतना ही है कि हम अलग नहीं हैं। एक, उस एक ब्रह्म के साथ हैं, उस एक ब्रह्मांड के साथ हैं। और प्रत्येक घटना भागीदार है। जब एक बच्चा पैदा हो रहा है तो पृथ्वी के चारों तरफ क्षितिज को घेर कर खड़े हुए जो भी नक्षत्र हैं–ग्रह हैं, उपग्रह हैं, दूर आकाश में महातारे हैं–वे सब के सब उस ऐसपोजर के क्षण में बच्चे के चिो पर गहराइयों तक प्रवेश कर जाते हैं। फिर उसकी कमजोरियां, उसकी ताकतें, उसका सामर्थ्य, सब सदा के लिए प्रभावित हो जाता है। जन्म के समय, बच्चे के मन की दशा फोटो प्लेट जैसी बहुत ही संवेदनशील होती हैं। जब बच्चा गर्भ धारण करता है, यह पहला ऐसपोजर है। जब बच्चा पैदा होता है वह दूसरा ऐसपोजर है। ये दो ऐसपोजर बच्चे के संवेदनशील मन पर फिल्म की तरह छप जाते हैं। उस समय में जैसी दुनिया है वैसी की वैसी बच्चे पर छप जाती है। यह बच्चे के सारे जीवन की सहानुभूति और विद्वेष को तय करता है। इस संबंध में यह भी आपको कह दूं कि ज्योतिष के तीन हिस्से हैं. एक–जिसे हम कहें अनिवार्य, एसेंशियल, जिसमें रेी भर फर्क नहीं होता। वही सर्वाधिक कठिन है उसे जानना। फिर उसके बाहर की परिधि है–नॉन एसेंशियल, जिसमें सब परिवर्तन हो सकते हैं। मगर हम उसी को जानने को उत्सुक होते हैं। और उन दोनों के बीच में एक परिधि है–सेमी एसेंशियल, अर्द्ध अनिवार्य, जिसमें जानने से परिवर्तन हो सकते हैं, न जानने से कभी परिवर्तन नहीं होंगे।

एसेंशियल–जो बिलकुल गहरा है

तीन हिस्से कर लें। एसेंशियल–जो बिलकुल गहरा है, अनिवार्य, जिसमें कोई अंतर नहीं हो सकता। उसे जानने के बाद उसके साथ सहयोग करने के सिवाय कोई उपाय नहीं है। उसके बाद दूसरा हिस्सा है–सेमी एसेंशियल, अर्द्ध अनिवार्य। अगर जान लेंगे तो बदल सकते हैं, अगर नहीं जानेंगे तो नहीं बदल पाएंगे। अज्ञान रहेगा, तो जो होना है वही होगा। ज्ञान होगा, तो आल्टरनेटिव्स हैं, विकल्प हैं, बदलाहट हो सकती है। और तीसरा सबसे ऊपर का सरफेस, वह है–नॉन एसेंशियल। उसमें कुछ भी जरूरी नहीं है।

आपके जीवन में अनिवार्य

मैं जिस ज्योतिष की बात कर रहा हूं, और आप जिसे ज्योतिष समझते रहे हैं, उससे गहरी है, उससे भिन्न है, उससे आयाम और है। मैं इस बात की चर्चा करते है। कि कुछ आपके जीवन में अनिवार्य है। और वह अनिवार्य आपके जीवन में और जगत के जीवन में संयुक्त और लयबद्ध है, अलग-अलग नहीं है। उसमें पूरा जगत भागीदार है। उसमें आप अकेले नहीं हैं। तीन बातें हुईं। ऐसा क्षेत्र है जहां सब सुनिश्चित है। उसे जानना सारभूत ज्योतिष को जानना है। और ऐसा क्षेत्र है जो दोनों के बीच में है। उसे जान कर आदमी, जो नहीं होना चाहिए उससे बच जाता है, जो होना चाहिए उसे कर लेता है। और अगर परिधि और केंद्र के मध्य में आदमी इस भांति जीये कि केंद्र पर पहुंच पाए तो उसकी जीवन की यात्रा धार्मिक हो जाती है। जब तुम ज्योतिषी के पास जाते हो, उससे आवश्यक प्रश्न पूछो, जैसे कि 'मैं तृप्त मरूंगा या अप्रसन्न मरुंगा?' ये पूछने जैसा प्रश्न है; यह एसेंसियल ज्योतिष से जुड़ा है। तुम सामान्यतया ज्योतिषी से पूछते हो कि कितना लंबा तुम जिओगे--जैसे कि जीना पर्याप्त है। तुम क्यों जिओगे? किसके लिए तुम जिओगे? ज्योतिष तुम्हारे हाथ में उपकरण हो सकता है यदि तुम एसेंसियल को नॉन एसेंसियल से अलग कर सको। गुलाब का फूल गुलाब का फूल है, वहां कुछ और होने का कोई प्रश्न ही नहीं है। और कमल कमल है। न तो कभी गुलाब कमल होने की कोशिश करता है, न ही कमल कभी गुलाब होने का प्रयास करता है।

विज्ञान ने साबित कर दिया है कि हर चीज एक ही ऊर्जा है

मॉडर्न फिजिस या आधुनिक भौतिक शास्त्र के अनुसार अस्तित्व में जो कुछ भी मौजूद है वह ऊर्जा ही है। तो फिर? या कारण है कि सब कुछ एक होने के बाद भी दुनिया में मतभेद दिखाई देते हैं? या एक ऊर्जा दूसरी के खिलाफ है? `या अच्छी और बुरी ऊर्जा जैसी कोइं चीज़ है?आधुनिक विज्ञान ने साबित कर दिया है कि हर चीज एक ही ऊर्जा है। दुनिया भर के धर्म कहते रहे हैं कि ईश्वर हर जगह है। चाहे आप यह कहें कि ईश्वर हर जगह है, या आप यह कहें कि हर चीज एक ही ऊर्जा है ये दोनों ही बातें एक ही सच्चाई को बताती हैं।

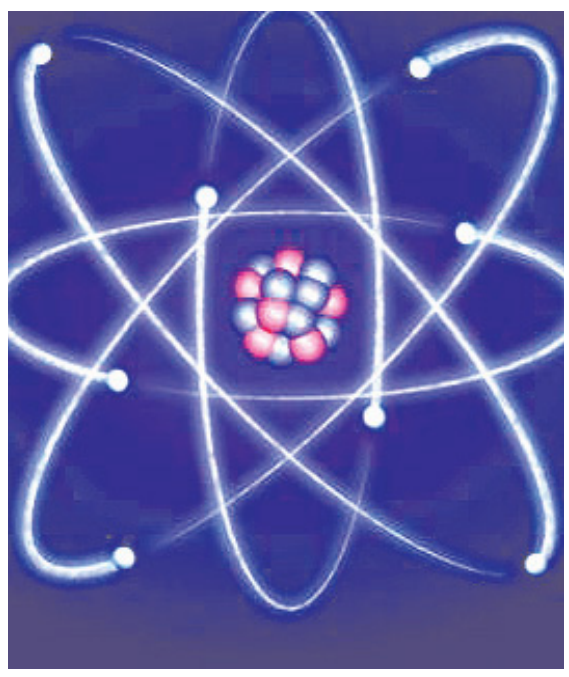

सब कुछ एक ही ऊर्जा है

यह सृष्टि एक ऊर्जा है, जो खुद को लाखों तरीके से अभिव्यक्त कर रही है। जो पानी गिर रहा है, वह ऊर्जा है, वही ऊर्जा यहां एक पेड़ के रूप में खड़ी है। वही ऊर्जा आपके रूप में बैठी है। वही ऊर्जा मेरे रूप में यहां मौजूद है। वही ऊर्जा एक चट्टान के रूप में खड़ी है। आधुनिक विज्ञान ने साबित कर दिया है कि हर चीज एक ही ऊर्जा है। दुनिया भर के धर्म कहते रहे हैं कि ईश्वर हर जगह है। चाहे आप यह कहें कि ईश्वर हर जगह है, या आप यह कहें कि हर चीज एक ही ऊर्जा है - ये दोनों ही बातें एक ही सच्चाई को बताती हैं। एक ही बात को दो अलग-अलग तरीकों से कह दिया गया है। वैज्ञानिकों ने गणितीय आधार पर यह नतीजा निकाला है। धार्मिक लोग बस इस पर विश्वास करते रहे हैं, लेकिन दोनों के जीवन में यह अभी तक जीती जागती हकीकत नहीं है। इसी वजह से हमारे जीवन में रूपांतरण नहीं आता। ऊर्जा के गणित की खोज के बाद आइंस्टीन के जीवन में कोई मूलभूत बदलाव नहीं आया। अब जब आप यह सवाल पूछते हैं कि या एक ऊर्जा दूसरी ऊर्जा पर हावी होती है, तो उसका जवाब है कि ऊर्जा तो एक ही है। यह दूसरी पर हावी कैसे हो सकती है? तों या इसका मतलब यह है कि लोग अलग-अलग तरह के नहीं हैं? अलग अलग तरह के लोग मौजूद हैं। अब अगर आप एक आदमी को एक उर्जा के रूप में और दूसरे आदमी को दूसरी उर्जा के रूप में लेते हैं, तो आप पूछ सकते है कि या यह ऊर्जा उस ऊर्जा पर हावी हो सकती है? यह इंसान उस इंसान पर हावी हो सकता है, शारीरिक रूप से, मानसिक रूप से, भावनात्मक रूप से और उर्जा के स्तर पर भी। लेकिन यह ऊर्जा के खिलाफ ऊर्जा नहीं है। यह एक इंसान है जो कि दूसरे इंसान के खिलाफ है। वह अपनी ऊर्जा का प्रयोग किसी पर हावी होने के लिए कर रहा है।जैसे पहाड़ों से जब पानी गिरता है तो वह चट्टानों को तोड़ता है। एक तरह से पानी की ऊर्जा, पत्थर की ऊर्जा पर हावी हो रही है। इसी तरह से लोग भी अपनी ऊर्जा का एक खास तरह से उपयोग करके किसी दूसरे पर हावी हो सकते हैं।

क्या है सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा

आपको किसने बताया कि ऊर्जाएं सकारात्मक और नकारात्मक होती हैं। मैं बिजली के सर्किट की बात नहीं कर रहा हूं। मैं जीवन-ऊर्जा की बात कर रहा हूं। विज्ञान कहता है कि केवल एक ऊर्जा है, धर्म कहता है कि ईश्वर हर जगह है। मैं तो केवल एक ही ऊर्जा के बारे में जानता हूं, लेकिन आपने दो बना लीं। क्यों? क्योंकि अगर आप दो नहीं बनाते तो आप इसके बारे में सोच नहीं पाते। अगर आप इसे बस एक के रूप में ही देखें, तो आपका पूरा का पूरा ज्ञान ही खत्म हो जाएगा। ऊर्जा एक ही तरह की होती है। एक ही ऊर्जा है जो एक खास तरीके से काम कर रही है। आपके कहने का मतलब शायद यह है कि ठंडी बहती हवा सकारात्मक ऊर्जा है, और भयंकर तूफान नकारात्मक ऊर्जा। ऐसा नहीं है। ये एक ही बात है। बस बात इतनी है कि इनमें से एक चीज आपको पसंद है और दूसरी नहीं।